*नानाजी ने ये सब धर्म से प्रेरित होकर किया है। धर्म की प्रेरणा से ही नानाजी ने चित्रकूट में एकात्म मानव दर्शन का जीवंत प्रतिमान खड़ा किया है। यह पाया गया कि मनुष्य का सुख केवल रोजी-रोटी मिलना नहीं है। हम अपना विकास ठेके पर नहीं देते। यह हमारी परम्परा नहीं है। चित्रकूट में नानाजी ने यही किया।*

खड़ा किया। उन दिनों मैं नागपुर का प्रचारक था। बैठक में नानाजी के साथ बैठा। नानाजी ने योजना बताई और सबसे कहा कि इसे कैसे करना है यह आप लोग बताएं। फिर बस्ती में काम शुरू किया गया। नानाजी ने बस्ती के लोगों को तब तक आर्थिक सहायता नहीं दिलाई जब तक वह खुद से काम के लिए आगे नहीं आए। विकास परिश्रम से होना चाहिए। अभी कहा जाता है कि आप पांच साल में बटन दबा दीजिए। सब कुछ हम करेंगे। मनुष्य को निठल्ला नहीं बनाना चाहिए। शासन की योजनाओं का लाभ समाज तभी ले पाएगा जब वह सामर्थवान बनेगा। भारत धर्म संस्कृति का देश है। धर्म का प्रतिमान सबको आगे बढ़ाने का है। सबका विकास मतलब काम के साथ मोक्ष की तरफ बढ़ने की प्रवृति। इसमें व्यक्ति, समूह और सृष्टि तीनों साथ-साथ विकसित होंगे। डा. भीमराव अज़्बेडकर ने कहा था कि धर्म देशकाल परिस्थिति के हिसाब से बदलता है। नानाजी ने पहला अवसर मिलते ही उसका उपयोग करके उसका एक जीवंत मॉडल चित्रकूट में खड़ा किया है। उसको देखकर देश में इस प्रकार के अनेक मॉडल खड़े हुए हैं। सरकार की नीति और दृष्टि में भी यह बातें दिखने लगी है। इसी आधार पर भारत का विकास होगा। विकास को समझने के लिए चित्रकूट जाकर प्रत्यक्ष देखना चाहिए।

**(परमपूज्य सरसंघचालक डा. मोहनरावजी भागवतजी का संसद भवन के बालयोगी सभागार में 26 मार्च, 2017 को दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा आयोजित नानाजी स्मृति व्याज़्यानमाला पर मार्गदर्शन हुआ। जिसका संपादित अंश-)**